International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 340-342

भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति एवं मॉरीशस में हिन्दी कविता

ममता

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जीन्द, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला इत्यादि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घकाल तक अपनायी गयी पद्धतियों का परिणाम होता है। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और परिवर्तन करता है। हम बचपन से ही दो प्रकार की संस्कृतियों के बारे में सुनते आ रहे हैं। भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति या अंग्रेजी संस्कृति हमारे भारत देश की संस्कृति को भारतीय संस्कृति अथवा पूर्वी संस्कृति के नाम से जाना जाता है और यूरोप, अमेरिका आदि देशों की संस्कृति को पाश्चात्य अथवा पश्चिमी संस्कृति के नाम से जाना जाता है। भारतीय संस्कृति जिसमें सदाचार, त्याग, संयम, धर्म सामाजिक परम्पराएँ रीतिरिवाज आदि है। आज तक जब भी भारतीय संस्कृति में जो कुछ भी सदाचार व नैतिकता के प्रति अपवाद रहा है तो पाश्चात्य संस्कृति को ही दोष दिया जाता है। परन्तु जितना पाश्चात्य संस्कृति के बारे में पढ़ा है, सोशल मीडिया के माध्यम से जितना पाश्चात्य संस्कृति के बारे में जाना है व कुछ एक मित्र व सगे सम्बन्धी जो विदेशों में रहते हैं, उनसे पाश्चात्य संस्कृति के बारे में समझा है तो यह अहसास किया कि ये धारणा पूर्णतयः उचित नहीं है। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का कितना प्रभाव पड़ा है, जिनमें सबसे पहले चर्चा करें तो वह पहनावा है– पहनावे की बात करें तो भारतीय संस्कृति के पहनावे में सूट, साड़ी, कुर्ता, पजामा इत्यादि है तो वहीं पाश्चात्य संस्कृति का पहनावा पैंट–शर्ट, स्कर्ट–टॉप इत्यादि है। हमेशा देखा गया है कि जब अंग्रेज लोग भारत में आते हैं तो यहाँ के पहनावे की ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन साथ ही साथ उस पहनावे को अपना लेता है। परन्तु अपनी इच्छानुकूल वे अपनी संस्कृति को पीछे नहीं छोड़ देते परन्तु जब तक भारतीय विदेश में जाता है तो वह भी वहाँ के पहनावे की ओर आकर्षित होता है साथ ही उसे अपना भी लेता है तो इसमें गलती किसकी है? यकीनन उस भारतीय की है जो अपने पहनावे को छोड़कर दूसरे देश के पहनावे को अपना रहे हैं। इसमें पाश्चात्य संस्कृति का दोष नहीं है। दूसरी बात करें तो वह भाषा है–आज अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी संस्कृति के रंग में रंगने को ही आधुनिकता का पर्याय समझा जाने लगा है। प्रत्येक सरकारी कार्यालय में हिन्दी और अंग्रेजी द्विभाषी रूप में काम करना आवश्यक है लेकिन अभी भी कई सरकारी कार्यालय है जिनमें अंग्रेजी में ही कार्य किया जाता है, मीटिंग की जाती है और सम्प्रेषण भी अंग्रेजी में किया जाता है जब हमारे भारत देश की अधिकारिक भाषा हिन्दी है तो उसे अपनाने में लोग कतराते हैं। एक समय था जब हमारे युवाओं के आदर्श, सिद्धान्त, विचार चिंतन और व्यवहार सब कुछ भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे हुए थे। वे स्वयं ही अपनी संस्कृति के रक्षक थे परन्तु आज उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से भ्रमित युवा वर्ग को भारतीय संस्कृति के अनुगमन में पिछड़ेपन का अहसास होने लगा है, जिस युवा वर्ग के ऊपर देश के भविष्य की जिम्मेदारी है, जिसकी ऊर्जा से रचनात्मक कार्य सृजन होना चाहिए, उसकी पसंद में नकारात्मक दृष्टिकोण हावी हो चुका है। संगीत हो या सौन्दर्य, प्रेरणास्त्रोत की बात हो या राजनीति का क्षेत्र, स्टेटस सिम्बल की पहचान सभी क्षेत्रों में युवाओं की पाश्चात्य संस्कृति में ढली नकारात्मक सोच स्पष्ट परिलक्षित होने लगी है। आज महानगरों की सड़कों पर तेज दौड़ती कारों का सर्वेक्षण करे तो पता लगेगा कि हर दूसरी कार में बजने वाला संगीत पॉप संगीत है। युवा वर्ग के लिए ऐसी धुन बजाना दुनिया के साथ चलने की निशानी बन गया है। युवा वर्ग के अनुसार जिंदगी में तेजी लानी हो या कुछ ठीक करना हो तो 'गो इन स्पीड' एवं पॉप संगीत सुनना तेजी लाने में सहायक है। हमें सांस्कृतिक विरासत में मिले शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत के स्थान पर युवा पीढ़ी ने पॉप संगीत को स्थापित करने का निश्चय कर लिया है। आज विदेशी संगीत चैनल युवाओं की पहली पसंद बनी हुई है। इन संगीत चैनलों के ज्यादा श्रोता 15 से 34 वर्ष की युवा वर्ग है। आज युवा वर्ग इन चैनलों को देखकर अपने आप को मार्डन और ऊँचे ख्यालों वाला समझ कर इठला रहा है। इससे ही अहसास हो रहा है कि आज के युवा कितने भ्रमित है और अपनी संस्कृति को लेकर और उनका झुकाव पाश्चात्य संस्कृति की ओर ज्यादा है। ये भारतीय संस्कृति के लिए दुख की बात है। आज युवाओं के लिए सौन्दर्य का मापदण्ड ही बदल गया है। विश्व में आज सौन्दर्य प्रतियोगिता करवाई जाती है, जिससे सौन्दर्य भी एक व्यवसाय बन गया है। आज लड़कियाँ सुन्दर दिखकर लाभ कमाने की अपेक्षा के लिए अनेक प्रकरण कर रही है, जो दया क्षमा, त्याग की मूर्ति कहलाती थी, उनकी परिभाषा ही बदल गई है। आज लड़कियाँ ऐसे–ऐसे पहनावा पहन रही है जो हमारे यहाँ अनुचित माना जाता है। आज युवा वर्ग अपने को पाश्चात्य संस्कृति में ढलने मात्र को ही अपना विकास समझते हैं। आज युवाओं के आंतरिक मूल्य और सिद्धान्त भी बदल गये हैं। आज उनका एकमात्र उद्देश्य पैसा कमाना है इसके लिए वे कुछ भी करने को तैयार हैं। हम भारतीय अपनी परम्परा, संस्कृति, ज्ञान और यहाँ तक कि महान विभूतियों को तब तक खास तवज्जो नहीं देते जब तक विदेशों में उसे स्वीकार न किया जाए। यही कारण है कि आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका में योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, होम्योपैथी और सिद्धा जैसे उपचार लोकप्रियता पा रहे हैं जबकि हम उन्हें बिसरा चुका हैं। हमें अपनी जड़ी–बूटियों, नीम, हल्दी और गोमूत्र का ख्याल तब आता है जब अमेरिका उन्हें पेटेंट करवा लेता है। योगा को हमने उपेक्षित करके छोड़

दिया पर जब वही 'योगा' बनकर आया तो हम उसके दीवाने बने बैठे हैं। पाश्चात्य संस्कृति में पले–बसे लोग भारत आकर संस्कार और मंत्रोच्चारण के बीच विवाह के बन्धन में बंधना पसन्द कर रहे हैं और हमें अपने ही संस्कार दकियानूसी और बकवास लगते हैं। हमारे देश में प्रत्येक राज्य की अपनी भाषा है। भाषाओं की विभिन्नता के समावेश के माध्यम के बावजूद अंग्रेजी को बोलचाल का माध्यम बनाया जाता है। मुझे समझ में नहीं आता कि जितनी मेहनत हम लोग अंग्रेजी सीखने में करते हैं, उतनी मेहनत करके हम अपने ही भारत देश की किसी अन्य भाषा को सीखने में क्यों नहीं करते? पाश्चात्य अथवा अंग्रेजी संस्कृति को दोष देने से पहले प्रत्येक भारतीय को अपने अन्दर झांक कर देखना चाहिये कि वो खुद अपनी संस्कृति के प्रति कितना निष्ठावान है। भारत के बाहर कई देशों में हिन्दी साहित्य में सृजन हो रहा है। जिसका सर्वोत्तम उदाहरण अगर देखें तो वह सर्जनात्मक साहित्य की जो प्राणवत्ता और जीवंतता 'मॉरिशस' के हिन्दी साहित्य में हुई है वह अन्यत्र दुर्लभ है। 'मॉरिशस' को 'हिन्द महासागर का मोती' कहा जाता है। 'अलेक्सांद्र जुमा' ने अपनी औपन्यासिक कृति 'जार्ज' में मॉरिशस को 'भारत भूमि की पुत्री कहा है।' मणिलाल डॉक्टर ने इसे 'छोटा भारत' कहा है। मॉरिशस में इस स्थिति को लाने में और हिन्दी अप्रवासियों ने जो बेइंतहा जुल्म और दमन सहन किए हैं उसका इतिहास मॉरिशस के हिन्दी साहित्य में झलकता है। रामचरित मानस के माध्यम से मॉरिशस में हिन्दी भाषा का बीज रोपण गया। अनजाने में वह भविष्य का विशाल वटवृक्ष बन जाएगा यह कोई नहीं जानता था। मॉरिशस में हिन्दी साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में साहित्य सृजन हो रहा है। 2040 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इन्द्रधनुषी सपनों के देश मॉरिशस में हिन्दी कविता को दो भागों में विभाजित किया है।

पूर्व स्वतन्त्रता काल –1923–1964
स्वातंत्र्योत्तर काल–1964 से अब तक की कविता

मॉरिशस में हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत मणिलाल डॉक्टर के हिन्दुस्तानी पत्र से हुई। 2 मार्च 1913 को इस पत्र में 'होली' शीर्षक से कविता छपी। 'होली' कविता को मॉरिशस की प्रथम हिन्दी कविता होने का श्रेय प्राप्त है। कविता के रचनाकार का नाम अज्ञात है। लक्ष्मीनारायण 'चतुर्वेदी रसपुंज' को मॉरिशस का प्रथम हिन्दी कवि माना जाता है। इनकी कुंडलियों की भाषा पर ब्रज, भोजपुरी और अवधी का प्रभाव परिलक्षित होता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

भैया जो सुख चहहू मिलिए सब सो नेह।
रोगी हीन दरिद्र पै अरपन करिए देह।।[1]

प्रथम रचना–रसपुंज कुंडलिया–1923

'रसपुंज' की दूसरी रचना 'शताब्दी सरोज' के नाम से 1935 में प्रकाशित हुई। यह काव्यकृति भारतीय अप्रवासियों के आगमन के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में लिखी गई थी। मॉरिशस के पहले प्रमुख कवि 'ब्रजेन्द्र कुमार भगत' 'मधुकर' है।[2]
सितम्बर 1916 को मोताई लांग में जन्में मधुकर मॉरिशस के राष्ट्रकवि है। इनकी तीस से अधिक काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है। जिनमें प्रमुख है–मधुबन, मधुकरी, मधुकलश, मधुमास, गुंजन, रसवंती, हमारा देश इत्यादि। इनकी कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

''रे साथी कदम बढ़ाता चल
देश–देश में गूंज उठा है स्वतन्त्रता का नारा।
बहती है मानव के मानस अविरल अमृत धारा।
आज गुलामी के बंधन को तोड़–फोड़ के चल।।''2

'मधुकर' की कविताओं में हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम दिखाई देता है। हिन्दी की प्रशस्ति में उन्होंने 'हिन्दी गान' शीर्षक काव्य कृति का प्रणयन किया है। मॉरिशस की आजादी से पूर्व कवि सम्मेलन, विष्णु दयाल कृत कविता कली, पंडित हरिप्रसाद मिश्र कृत 'छंदवाटिका', दोसिया कृत 'सुधा कलश' एवं सोमदत्त बाखोरी कृत मुझे कुछ कहना है जैसी काव्य कृतियों का प्रकाशन हुआ। 12 मार्च 1964 को मॉरिशस ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त हुआ।
स्वाधीन राष्ट्र के नागरिकों के दिलों में नवोल्लास फूटा। आजादी के बाद हिन्दी कविता में एक नया मोड़ आया आजादी के पाने का उल्लास हरिनारायण सीता कृत 'प्रभात' जनार्दन कालीचरण कृत 'प्रथम रश्मि' और रामरतन रिसाल मिश्र कृत 'बिखरे सुमन' प्रभृति रचनाओं में दिखाई देता है। मॉरिशस में हिन्दी कविता लिखने वालों की संख्या शताधिक है। प्रमुख हिन्दी कवियों की रचनाओं के आधार पर हम मॉरिशस की हिन्दी काव्य/कविता के स्वरूप को उद्घाटित करना चाहेंगे–जिसमें सबसे पहले–सोमदत्त बखोरी है जो हिन्दी कविता के अत्यंत सशक्त हस्ताक्षर है। भारत सरकार द्वारा 'विश्व हिन्दी पुरस्कार' से सम्मानित बखोरी के चार काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रकाशित काव्य कृतियाँ हैं– मुझे कुछ कहना है, बीच में बहती धारा, नशे की खोज, साँप भी सपेरा भी। मुनीश्वरलाल चिंतामणि मुक्त छंद की कविता के जनक माने जाते हैं। उनकी काव्य कृति 'शांति निकेतन की ओर' 1969 में प्रकाशित हुई। उनकी कविताओं में क्रान्ति और संघर्ष के तत्त्व परिलक्षित होती है। औद्योगिक संस्कृति की विकृतियों पर गहरा प्रभाव डालतते हुए लिखते हैं–

''इंसान यहां खुद को भूलकर
रफ्ता–रफ्ता
पत्थर बनता जा रहा है।
लोहा बनता जा रहा है।[3]

जिस रचनाकार ने हिन्दी कविता को एक नया आयाम दिया है जिसकी कविताएँ भारत के हिन्दी साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान पाने की हकदार है। वह है मॉरिशस के महान कथा–शिल्पी 'अभिमन्यु अनत शबनम'। अब तक इनके चार कविता संकलन प्रकाशित हो चुके हैं– 'कैक्टस के दांत', 'नागफनी में उलझी सांसें', 'एक डायरी ब्यान' तथा 'गुलमोहर खौल उठा'।[4] इनकी कविताओं में शोषण, दमन और अत्याचार, शोषण के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया गया है। इनके अतिरिक्त 'हरिनारायण सीता' अपनी महत्त्वपूर्ण कृति प्रभात के लिए जाने जाते हैं। उनकी कविताओं में प्रवासी स्वर, मॉरिशस की हिन्दी कविता तथा 'मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि' है। कविता में अप्रवासी भारतीयों की वेदना का गूँगा इतिहास छिपा हुआ है। एक अन्य साहित्यकार 'पूजानन्द नेमा' मॉरिशस के दक्षिण प्रांत कि लाफ्लेरा गाँव से है। उनकी कविता संग्रह 'चुप्पी की आवाज' 1995 में नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। उन्होंने आकाशगंगा नामक काव्य संग्रह का सम्पादन भी किया। मॉरिशस में हिन्दी कविता के सर्वाधिक

समर्थ युवा स्वर 'हेमराज सुंदर' है। उनकी कविता यात्रा की शुरुआत 'आक्रोश' से हुई। 'चेतना और चुनौती' उनके प्रकाशित कविता संकलन है। उनकी कविताओं में युवाओं की कुंठा, निराशा और बेबसी के स्वर भी मिलते है। मॉरिशस के अन्य कवियों में 'मुकेश जी बोध' (ग़ज़लकार), महेश राम जियावन, वीरसेन जागासिंह इत्यादि कवि हुए जिन पर भारत के साहित्यकारों का गहरा प्रभाव पड़ा है। मॉरिशस में हिन्दी में अब तक शताधिक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वहाँ की हिंदी कविता औपनिवेशिक दास्ता से मुक्त होकर अपने पथ पर अग्रसर है। एक ओर जहाँ विश्व में भारतीय संस्कृति की गहरी छाप पड़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर भारत का युवा वर्ग अपनी ही संस्कृति के दुश्मन बने हुए है। ऐसे में सब मिलकर प्रयत्न करें कि युवाओं की कुंठित मानसिकता को बदले व अपनी संस्कृति की रक्षा करें। युवाओं के पाश्चात्य अंधानुकरणात्मतक प्रवृत्ति को रोककर उन्हें अपनी संस्कृति के बल पर गर्व का अनुभव कराया जाए। उसके लिए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. भारत को विज्ञान–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में आना पड़ेगा।
2. प्रदेशों की अपनी भाषाओं में ही मुख्य शिक्षा हो तथा प्रदेशो का राजकाज भी।
3. अंग्रेजी की शिक्षा उतनी ही दी जाए जितनी एक विदेशी भाशा की उपयोगिता को देखते हुए आवश्यक हो।
4. अंग्रेजी को हिन्दी के स्थान से दूर रखना है।
5. सांस्कृतिक शिखा पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि भ्रष्टता का उन्मूलन किया जा सके।
6. ''संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा बनाने का आदेश है। क्षेत्रीय भाषाओं को अपने क्षेत्रों में राजकाज करने का आदेश है तो उन्हें (सरकारी कार्यालयों) में हिन्दी भाषा के प्रयोग पर बल देना चाहिए साथ ही हमारे आदान–प्रदान के सौहार्द पर, त्याग की भावना पर, आपकी प्रेम की भावना पर तथा मुख्यतः देश प्रेम पर निर्भर करता है। प्रेम इस विषय में सबसे महत्त्वपूर्ण शक्ति है। हमारी मूल संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली संस्कृति है जिसका अस्तित्व सारे भारत में है तथा विश्व के मानस पटल पर भारतीय संस्कृति की गहरी छाप है।[5] जिसकी झलक मॉरिशस में हिन्दी कविता के अध्ययन में स्पष्ट परिलक्षित होती है जिस तरह मॉरिशस में हिन्दी कविता का भविष्य उज्जवल है उसी तरह विश्व के अन्य देशों में भी भारतीय साहित्य व संस्कृति की सम्मानजनक स्थिति होगी। उसके लिए आवश्यकता भारतीयों के परस्पर प्रेम व सौहार्द की है। अपनी संस्कृति व सभ्यता के सम्मान की है। जिसे हम सभी को मिलकर वह सम्मान दिलाना है, जिसकी हकधारिणी हमारी संस्कृति व हमारी प्यारी हिन्दी है।

संदर्भ

1. इन्द्रदेव भोला, हिन्दी के विश्वदूत, पृ. 92।
2. धनराज शम्भू, मॉरिशस के कवि, पृ. 245।
3. काजल वाजपेयी, साहित्य शिल्पी (भारतीय व पाश्चात्य संस्कृति), पृ. 98।
4. सुनील विक्रम सिंह, मॉरिशस में हिन्दी की सौ साल पुरानी परम्परा, पृ. 12।
5. स्नेह ठाकुर, हिन्दी के विश्वदूत, पृ. 57।